eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

महिला सशक्तिकरण पर के शिक्षा के प्रभावः एक समाजशास्त्रिय अध्ययन

श्रीमती विनोद[1]
[1]शोधार्थी– समाजशास्त्र, गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा, राजस्थान

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है। शिक्षा जीवन के दरवाजे की कुंजी है जिसका लक्ष्य ज्ञान रूपी प्रकाश को फैलाना तथा अज्ञानता रूपी अंधेरे को दूर करना है। सशक्तिकरण एक सतत प्रक्रिया है इसका प्रारंभ व्यक्ति से होता है तथा विलय समाज कि विचारधारा के साथ होता हैं वहीं विचारधारा उसे कालांतर मे विकसीत तथा पोषित करती है। समाज में महिलाओं को सशक्त करने की प्रक्रिया की शुरूआत परिवार से होती है क्योंकि परिवार ही वह पहली इकाई है जो महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें शिक्षा का महत्व समझाने कि शुरूआत करता है, क्योंकि विभिन्न परिवारों के योग से ही समुदाय तथा समाज का निर्माण होता है। यदि परिवार स्त्रियों के साथ समानता का व्यवहार करें लडकी और लड़के को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करे तो महिलाएं स्वयं ही सशक्त हो जाती हैं।

शब्द कुंजी– सशक्तिकरण, शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, समानता

Introduction

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को समझने के लिए आवश्यक है कि इसके ऐतिहासिक पक्ष पर भी दृष्टि डालें। भारतीय समाज में प्राचिन काल से ही महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्रदान किये गए हैं, उसे अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मलित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया था, प्राचिन काल में भी महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था अर्थात् नारि को शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान के क्षैत्र में भी उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और मुखरित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गई है, लेकिन मध्यान्तर के बाद नारी की स्थिति में गिरावट आई, महिलाओं से शिक्षा का मौलिक अधिकार छिन लिया गया, लेकिन वर्तमान संदर्भ में देखा जाए तो समय के साथ साथ महिलाओं की शिक्षा के क्षैत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है, समय करवट ले रहा है, शिक्षित व साक्षरता के कारण महिलाएं शोषण व उत्पीडन मुक्त होकर विकास की और अग्रसर हैं, वह हर क्षैत्र में अनोखी पहचान बना रही हैं।

महिला सशक्तिकरण पर शिक्षा के प्रभाव– एक सुशिक्षित महिला अपने ज्ञान से अपने परिवार को प्रकाशमय करने के साथ साथ स्वयं भी आत्मविश्वास से परिपूर्ण होती है। संतान की प्रथम गुरू उसकी माता यदि सुशिक्षित हो तो भावी पिढ़ी के शिक्षित होने की संभावनाएं कई प्रतिशत बढ़ जाती हैं, इसके अतिरिक्त सामाजिक विसंगतियों से लड़ने का एकमात्र हथियार भी शिक्षा ही है। इसक माध्यम से स्त्रियां परिवार तथा समाज में सम्मान के साथ साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त कर सकती हैं। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि शिक्षित स्त्री परिवार के फैसलों में अपनी राय देने के साथ साथ निर्णय प्रक्रिया में भी भागीदारी कर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

सकती है। आज ये सकारात्मक परिवर्तन प्रत्येक समाज में देखा जा रहा है, लोग बच्चियों की शादी की चिंता से ज्यादा उन्हें पढ़ाने में रूचि लेने लगे हैं, अर्थात शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं।

उद्देश्य– महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं के शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करना है, तथा महिलाओं कि प्रगति एवं उनमें आत्मविश्वास का संचार करना है। महिला सशक्तिकरण देश के विकास के लिए सबसे महत्वपुर्ण है, महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि शिक्षा ही महिलाओं को अपने जीवन पर स्वतंत्र निर्णय लेने कि शक्ति प्रदान करती है, जिससे महिलाओं में आंतरिक मूल्य की भावना पैदा होगी, क्योंकि महिला समाज की धूरी है, यदि यह धूरी टूट गई तो समाज भी टूट जायेगा। अतः महिलाओं को शिक्षित करना अति आवश्यक है। क्योंकि जिन समाजों ने महिलाओं को प्रगति का मौका दिया है उन्हें सभ्यता के शिखर पर पहुंचने से कोई नहीं रो सका है।

महिलाओं की शिक्षा में समस्याएँ– भारत के संदर्भ में यदि देखें तो महिलाओं की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। अशिक्षा, शोषण, आर्थिक पराधिनता राजनैतिक सोच का अभाव आदि जैसी प्रमुख बाधाएँ हैं, जो महिला सशक्तिकरण में रूकावट लाती हैं। सशक्तिकरण में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है। बिना शिक्षा के महिलाओं की परिस्थिति में सकारात्मक परिवर्तन असम्भव है। क्योंकि भारत में लड़कियों का कम आयु में विवाह होने के कारण लड़कियों को पढ़ाई का अवसर प्राप्त नहीं हो पाता, दुसरा हमारे भारत में लिंग असमानत के कारण लड़के व लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप लड़के और लड़कियों का अलग अलग समाजिकरण किया जाता है। दिल्ली के एक विशिष्ट विद्यालय में प्रवेश के इच्छुक अभिभावको पर किये गये एक अध्ययन से पता चलता है कि उन्हें अपने बेटे एवं बेटियों से अलग अलग अपक्षाएँ होती हैं।

बेटों से प्रायः घर के बाहर के कार्य करने को कहा जाता है, जबकि बेटियों से गृहकार्य, अतः सबसे पहले इस विचारधारा को ही बदलना होगा। क्योंकि जिस प्रकार का समाजिकता माता पिता करेंगें बच्चे भी वही सिखेंगे। माता पिता को बच्चियों की शिक्षा को भी बराबर महत्व देना चाहिए। तीसरी परेशानी है निर्धनता, निर्धनता लड़कियों को शिक्षित होने में स्पष्ट रूप से बाधा डालती हैं। अक्सर देखा जाता है कि निर्धन परिवार में यदि लड़का–लडकी दोनों हैं और वे एक ही बच्चे को पढ़ा सकते हैं तो वे लड़के की शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं। लड़कियाँ गृहकार्य करने में माता पिता की मदद करती हैं, अतः 2011 की जनगणता के अनुसार भारत में पुरूष और महिला साक्षरता दर के बीच में अंतर 16.68 प्रतिशत था। इससे पता चलता है कि महिलाओ को शिक्षा के क्षैत्र में और ओ बढ़ने की आवश्यकता है।

समाधान– शिक्षा सामाजिक वातावरण बनाने का साधन माना जाता है, शिक्षा के माध्यम से ज्ञान, शक्ति और अनुभव प्राप्त करके जन्मजात क्षमता को मजबुत बनाया जा सकता है, महिलाओं का सशक्तिकरण वर्तमान के महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक बन गया है, यह माना जाता है कि महिलाओं को शिक्षा आजिविका, स्वास्थ्य और अन्य सभी मापदंडों के मामले में पुरूष के बराबर खड़ा होना चाहिए। महिलाओं की शिक्षा समाज कि उन्नती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पं. जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में ''यदि आप एक पुरूष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, हालाकि यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो पुरे परिवार को शिक्षित करते हैं।''

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

समाज का पूर्ण विकास तभी संभव है जब पुरूष और महिला का समान विकास हो दोनो कों व्यवहारिक रूप से समान अधिकार प्राप्त हों, महिला सशक्तिकरण हेतू वर्तमान में चलाये जा रहे प्रोग्राम :–

1. लाड़ो प्रोत्साहन योजना
2. सखी पहल प्रोग्राम
3. मरू उड़ान प्रोग्राम
4. वन स्टॉप सेंटर और महिला हेल्पलाईन का सार्वभौमिकरण
5. राजकोष सिटीजन APP का "Needhelp" फिचर शुरू करना।

निष्कर्ष– महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की अहम भूमिका है शिक्षा से महिलाओं को ज्ञान, कौशल, एवं आत्म विश्वास मिलता है, इससे वे लैंगिग रूढियों को चुनौती दे पाती है। और समाज में अपना उचित स्थान बना पाती हैं। शिक्षा प्राप्त करके महिलाओं को अपने भाग्य को आकार देने और अपने समुदाय की बेहतरी में योगदान करने की शक्ति मिलती है अर्थात् एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ है, एक परिवार, समाज को शिक्षित करना। क्योंकि शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा महिलाओं की रोजगार तथा स्वास्थ्य संबंधि स्थिति को सुधारा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1 मनीषा देसाई (2010/14) महिला अधिकारिता और मानव विकास **युएनडीपी**

2. वी.देवी, वुमन एण्ड रूरल डेवलपमेन्ट, मित्तल पब्लिकेशन, न्यु देहली 1990।

3. एस.एन.मिश्रा, न्यु होराईजन इन रूरल डेवलपमेन्ट 1994।

4. प्रेम सहाय, हिन्दू विवाह संस्कार, प्रभात प्रकाशनए